भारतीय करारोपण के सुधार के बारे में सुझाव

निवेश पर करारोपण का क्या प्रभाव पड़ता है।

आधुनिक युग में किसी भी देश की सरकार की आय का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है। करों या टैक्सों का लगाना तथा उनके द्वारा प्राप्त आय। सरकार करों से प्राप्त आय या अन्य साधनों से प्राप्त आय को जनता के सामान्य कल्याण तथा देश के आर्थिक विकास पर व्यय करती है। कर एक अनिवार्य भुगतान है जो कि उस व्यक्ति को अवश्य या अनिवार्य रूप से देना होगा जिस पर कर लगाया जाता है चाहे वह व्यक्ति उसे पसन्द करे या न करे। कर व्यक्ति की आय पर, सम्पत्ति पर या वस्तु की विक्रय आदि पर लगाया जाता है और कर का भुगतान करना सम्बन्धित व्यक्ति की व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। यदि व्यक्ति कर नहीं देता तो सरकार उसे दण्ड दे सकती है।

कर की परिभाषा

कर की परिभाषा कई अर्थशास्त्रियों ने अपने मतानुसार दी है जो निम्नलिखित है-

प्रो. सेलिग्रमेन के अनुसार- कर व्यक्तियों द्वारा सरकार को दिया गया । एक अनिवार्य अशंदान या भुगतान है जो कि सार्वजनिक हितों पर किए गए व्यय की पूर्ति के लिए दिया जाता है विशिष्ट व्यक्तिगत हितों व लाभ के लिए नहीं।

प्रो. टॉजिग के अनुसार- आय के अन्य साधनों की तुलना में कर का सार इन्ही तथ्यों में है कि उसमें सरकार व करदाता के बीच जैसा का तैसा सम्बन्ध का अभाव होता है।

फिंडले शिराज के शब्दों में- कर सरकारी अधिकारियों द्वारा किये जाने वाले वे अनुदान हैं जो सार्वजनिक हित को पूरा करने के लिए कर वसूल किये जाते हैं और जिनका किसी विशेष लाभ से कोई सम्बन्ध नही हैं।

करारोपण के सुधार के सुझाव (Suggestions for the improvement of Taxation System)

करो द्वारा प्राप्त आय सरकार जनता के सामान्य कल्याण व हित पर व्यय करती है। किसी व्यक्ति विशेष के हित के लिए नहीं करती टैक्स देने वाले व्यक्ति या सरकार के मध्य कोई विनियय सम्बन्ध नहीं होता। सरकार अपने व्ययों की पूर्ति हेतु करों को लगाती है परन्तु करों से अधिकतम व्यय प्राप्त करने के साथ-साथ सामाजिक तथा आर्थिक उद्देश्यों को भी ध्यान में रखा जाता है।

(1) निश्चितता (Certainly)-

कर प्रणाली में निश्चितता होनी चाहिए अर्थात् किसी व्यक्ति को आयों, सम्पत्तियों, उत्पादनों, या विक्रयों पर किस दर से कर देना है। यह निश्चित किया जाना चाहिए और इनके अन्दर बार-बार परिवर्तन नहीं किए जाने चाहिए। निश्चितता का अर्थ यह भी है कि कर सम्बन्धी अधिनियमों में जो प्रावधान दिये गए हों, उनके अर्थ स्पष्ट हो और उनके निर्वचन (Interpretation) में अस्पष्टता या अनावश्यक मत भिन्नता उत्पन्न न हो।

(2) सुविधाजनक (Convenient)-

करों को सुविधाजनक होने फर इस प्रकार से लगाए जाने चाहिए कि देने वाले करदाता को कष्ट या त्याग का अनुभव न हो अत: कर इस प्रकार लगाए जाएं कि करदाताओं को अनावश्यक या असूविधा न हो कर निर्धारण की सरलीकृत व्यवस्था होनी चाहिए। जिससे कर प्रणाली में सुविधा हो सके।

(3) पर्याप्त (Sufficiency)-

कर प्रणाली को सुधार हेतु हमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए जिससे आगम पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हो सकें।

(4) समता एवं न्याय (Equity and justice)-

करारोपण के सुधार हेतु करदाता के दृष्टिकोण में समता व न्याय सबसे अधिक सुधारजनक तथ्य है इसका अर्थ है कि भार का उचित वितरण किया जाए और यह वितरण केवल सिद्धान्त में ही नहीं बल्कि करदाता को भी यह अनुभव हो कि कर भार का न्यायपूर्ण वितरण किया गया है और इसके द्वारा किसी भी वर्ग का शोषण नहीं किया जा सकता।

(5) मितव्ययिता (Economical)-

करारोपण के सुधार हेतु ऐसे कार्यक्रम व प्रणाली अपनानी चाहिए कि प्रशासन की दृष्टि से कर प्रणाली ऐसी हो, जिससे कर प्राप्ति की तुलना में कर वसूली व्यय का अनुपात बहुत कम हो और करदाताओं की दृष्टि से जिसमें कर के भुगतान के अतिरिक्त ऊपरी व्यय बहुत कम हो।

(6) सामाजिक विकास की पूर्ति (Fulfilment of Social development)-

कर केवल सरकारी आय का ही साधन नहीं है वह अधिक से अधिक सामाजिक विकास की पूर्ति का भी साधन है। कर प्रणाली ऐसी हो जिससे विविध सामाजिक विकास की पूर्ति हो सके। जैसे आय और सम्पत्ति के वितरण में विषमताएँ कम हो, हानिकारक वस्तुओं का उपभोग कम हो, विलासिता की वस्तुओं के आयात का नियमन होना आवश्यक है आदि।

(7) समन्वित पद्धति (Co-ordinated System)-

भारत जैसी संघीय व्यवस्था के अन्तर्गत यह आवश्यक है कि केन्द्र राज्य और स्थानीय सरकारों के करों तथा प्रगतिशील व अनुपातिक करों को सन्तुलित रूप से अपनाना चाहिए।

(8) सन्तुलित पद्धति (Balanced System)-

कर पद्धति करों के प्रकार और दरों की दृष्टि से सन्तुलित होनी चाहिए। अर्थात् प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष करों तथा प्रगतिशील व आनुपातिक करों सन्तुलित रूप से रखना चाहिए।

(9) शुद्ध एवं पर्याप्त आँकडों पर आधारित (Pure and Adequate Data)-

कर प्रणाली के अन्तर्गत ऐसे आँकडें होने चाहिए जो शद्ध एवं पर्याप्त हो इसके लिए यह विविध आवश्यक है कि वह अर्थ व्यवस्था के विविध पहलुओं से सम्बन्धित कर प्रर्याप्त व शुद्ध आँकड़ों पर आधारित हो।

(10) अन्तर्निहित लोच (Built-in-elasticity)-

कर प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जिसके अन्तर्गत राष्ट्रीय आय की मात्रा के अनुसार लोच बनी रहे और कर की आय बक़ान के लिए बार-बार कर की दरों या आधारों में परिवर्तन न करना पड़।

(11) उत्पादकता (Productivity)-

कर प्रणाली के सुधार के लिए उत्पादकता का होना आवश्यक है। उत्पादकता का अर्थ दो दृष्टिकोणों से लगाया जा सकता है- कर आगम की दृष्टि से आर कर के प्रभावों की दृष्टि से। कर आगम की दृष्टि पर्याप्त की दृष्टि के समान ही है कर के प्रभावों की दृष्टि से अच्छी कर पद्धति वह है जो देश में बचत, विनियोग, उत्पादन, रोजगार वृद्धि पर विपरीत प्रभाव न डालें।

(12) ईमानदार व कुशल प्रशासन (Honesty and Active Administration)-

करारोपण के सुधार हेतु कर प्रशासन का ईमानदार व कुशल होना भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है। क्योंकि ऐसा इसल आवश्यक है क्योंकि इसके बिना सैद्धान्तिक रूप गे कितनी भी अच्छी क्यों न हो, व्यावहारिक रूप से दोषपूर्ण बन जाती है।

(13) बचतों व पूँजी निर्माण को प्रोत्साहित के लिए (Encouraging Saving and Capital Formation)-

करारोपण द्वारा बचतों को प्रोत्साहन मिलता है यदि करारोपण के सुधार हेतु अच्छी सुविधाएँ हों तो हम अधिक बचतों एवं पूँजी निर्माण में सहायता पा सकते हैं।

(14) आर्थिक संसाधनों के कुशल प्रयोग हेतु (Uses of Economic Resources)-

कर प्रणाली की ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे आर्थिक संसाधनों का प्रयोग कुशल हो सके ताकि कर के भुगतान हेतु आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सके।

इस प्रकार निष्कर्ष स्वरूप हम यह कह सकते हैं कि इन तथ्यों के प्रयोग हेतु हम करारोपण की पद्धति में भी सुधार कर सकते हैं।

शिक्षाशस्त्र

महत्वपूर्ण लिंक

- ई-लर्निंग का अर्थ | ई-लर्निंग की प्रकृति एवं विशेषतायें | ई-लर्निंग के विविध रूपों एवं शैलियों का उल्लेख
- ओवरहेड प्रोजेक्टर पर संक्षिप्त लेख | ओवरहेड प्रोजेक्टर का उपयोग | ओवरहेड प्रोजेक्टर की सीमायें
- आगमन विधि का अर्थ | निगमन पद्धति का अर्थ | आगमन विधि तथा निगमन पद्धति के गुण एवं दोष
- शिक्षा का अर्थ | शिक्षा की प्रमुख परिभाषाएँ | शिक्षा की विशेषताएँ | Meaning of education in Hindi | Key definitions of education in Hindi | Characteristics of education in Hindi
- शिक्षा की अवधारणा | भारतीय शिक्षा की अवधारणा | Concept of education in Hindi | Concept of Indian education in Hindi

- शिक्षा के प्रकार | औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा | औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में अन्तर
- शिक्षा के अंग अथवा घटक | Parts or components of education in Hindi
- शिक्षा के विभिन्न प्रकार | शिक्षा के प्रकार या रूप | Different types of education in Hindi | Types or forms of education in Hindi
- निरौपचारिक शिक्षा का अर्थ तथा परिभाषा | निरौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ | निरौपचारिक शिक्षा के उद्देश्य
- शिक्षा के प्रमुख कार्य | शिक्षा के राष्ट्रीय जीवन में क्या कार्य | Major functions of education in human life in Hindi | What work in the national life of education in Hindi
- वर्धा बुनियादी शिक्षा | वर्धा बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत | बुनियादी शिक्षा के उद्देश्य | वर्धा शिक्षा योजना के गुण - दोष
- राज्य के शैक्षिक कार्यों का वर्णन | शैक्षिक अभिकरण के रूप में राज्य के कार्यों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्य | शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्यों का वर्णन कीजिये
- विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपाय | विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपायों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में परिवार के कार्य | Family functions as an educational agency in Hindi
- नवाचार का अर्थ | नवाचारों को लाने में शिक्षा की भूमिका | नवाचार की विशेषतायें
- नवाचार के मार्ग में अवरोध तत्व | शिक्षा में 'नवीन प्रवृत्तियों (नवाचार) के मार्ग में अवरोध तत्वों' का वर्णन
- दर्शन का अर्थ | दर्शन की परिभाषाएं | दर्शन का अध्ययन क्षेत्र
- गांधी जी का शिक्षा दर्शन - आदर्शवाद, प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद का समन्वय है।
- शिक्षा में महात्मा गाँधी का योगदान या शैक्षिक विचार | गाँधीजी के शिक्षा दर्शन से आप क्या समझते हैं?
- विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन शिक्षाशास्त्री के रूप में | विवकानन्द के अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियां
- मानव निर्माण शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द का योगदान | मानव निर्माण शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य
- आदर्शवाद में शिक्षा के उद्देश्य | आदर्शवाद में शिक्षा के सम्प्रत्यय
- जॉन डीवी के प्रयोजनवादी शिक्षा | जॉन डीवी की प्रयोजनवादी शिक्षा का अर्थ
- रूसो की निषेधात्मक शिक्षा | निषेधात्मक शिक्षा क्या है रूसो के शब्दों में बताइये
- आदर्शवाद की परिभाषा | आदर्शवाद के मूल सिद्धान्त
- सुकरात का शिक्षा दर्शन | सुकरात की शिक्षण पद्धति
- प्रकृतिवाद में रूसो एवं टैगोर का योगदान | प्रकृतिवाद में रूसो का योगदान | प्रकृतिवाद में टैगोर का योगदान
- प्रकृतिवाद क्या है | प्रकृतिवादी शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ | प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम के सामान्य तत्व
- प्रकृतिवाद में रूसो का योगदांन | रूसो की प्रकृतिवादी विचारधारा
- प्रयोजनवाद का अर्थ | प्रयोजनवाद दर्शन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन
- प्रयोजनवाद के शिक्षा के उद्देश्य | प्रयोजनवाद तथा शिक्षण-विधियाँ | प्रयोजनवाद के अनुसार शिक्षा-पाठ्यक्रम
- प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद मे तुलना | प्रकृतिवादी दर्शन की विशेषताएँ | प्रयोजनवाद की विशेषताएं
- आधुनिक शिक्षा पर प्रयोजनवाद के प्रभाव का उल्लेख
- आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद का प्रभाव | आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद क्या प्रभाव पड़ा

- प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम के सिद्धान्त | प्रयोजनवादी पाठ्यक्रम पर संक्षिप्त लेख | प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का वर्णन
- ओशो का शैक्षिक योगदान | ओशो के शैक्षिक योगदान पर संक्षिप्त लेख
- फ्रेरा का शिक्षा दर्शन | फ्रेरा का शैक्षिक आदर्श | Frara's education philosophy in hindi | Frara's educational ideal in hindi
- इवान इर्लिच का जीवन परिचय | इर्लिच का शैक्षिक योगदान | Ivan Irlich's life introduction in hindi | Irlich's educational contribution in hindi
- जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य | जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के कार्य
- जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचार | जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचारों का वर्णन
- राष्ट्रीय एकता व भावात्मक एकता का सम्बन्ध | भारत में राष्ट्रीय एकता का संकट | निवारण हेतु कोठारी आयोग के सुझाव
- राष्ट्रीय एकता के मार्ग में मुख्य बाधाएं | शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय एकता की बाधाओं को दूर करने के उपाय
- मूल्य शिक्षा के विकास में परिवार की भूमिका का वर्णन | Describe the role of family in the development of value education in Hindi
- मूल्य शिक्षा का अर्थ | मूल्य शिक्षा की आवश्यकता | मूल्य शिक्षा की अवधारणा
- भावनात्मक एकता के विकास में शिक्षा किस प्रकार सहायक हो सकती है? | बच्चों को भावनात्मक एकता के लिए शिक्षा देना क्यों आवश्यक है?
- पर्यावरण शिक्षा का अर्थ | पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य | पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम
- भावात्मक एकता के लिए भावात्मक एकता समिति द्वारा दिये गये सुझावों का वर्णन कीजिए।
- राष्ट्रीय एकता का अर्थ | राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति के लिए उपाय | राष्ट्रीय एकीकरण में शिक्षक की भूमिका
- भावात्मक एकता का अर्थ | भावात्मक एकता के स्तर | भावात्मक एकता के विकास में शिक्षा के कार्य | राष्ट्रीय एकता भावात्मक एकता के सम्बन्ध
- अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना क्या है? | शिक्षा किस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करने में सहायक हो सकती है? | अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के बाधक तत्वों का उल्लेख कीजिए।
- भारत में शिक्षा का भूमण्डलीकरण किस प्रकार गति प्राप्त कर रहा है? | भूमण्डलीकरण क्या है?
- संचार का अर्थ | संचार के प्रकार | मीडिया एवं शिक्षा के मध्य सम्बन्ध | जनसंचार के साधनों का महत्व
- शैक्षिक अर्थशास्त्र का क्षेत्र | scope of educational economics
- शिक्षा के अर्थशास्त्र के शिक्षण के उद्देश्य | Objectives of teaching economics of education in Hindi
- शिक्षा के अर्थशास्त्र की संकल्पना | भारत के अर्थशास्त्र की संकल्पना | Concept of semiology of education in Hindi
- शिक्षा के अर्थशास्त्र का क्षेत्र | विकासशील अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में शिक्षा के अर्थशास्त्र की भूमिका
- भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति | Nature of Indian economy in hindi
- अर्थव्यवस्था के प्रकार | Type of economy in hindi
- शिक्षा का निवेश तथा उपयोग के रूप में वर्णन | Description of education as investment and use in Hindi

sarkariguider.com

sarkariguider.com

sarkariguider.com